Part I Hon,
Paper I

दंतिदुर्ग की संक्षिप्त जीवनी

Write a short note on Dantidurga ?

दंतिदुर्ग —— दंतिदुर्ग राष्ट्रकूट वंश का महा-प्रतापी राजा था जो अपने पिता इन्द्र प्रथम के मरने के बाद सिंहासन पर बैठा। वह बड़ा पराक्रमी तथा दूरदर्शी शासक था। राष्ट्रवंश की स्वतन्त्रता तथा महत्ता की स्थापना सबसे पहले इसी ने की थी।

दंतिदुर्ग सिंहासन पर बैठते ही तत्कालिन राजनीतिक परिस्थिति का अध्ययन किया और एक निश्चित योजना के आधार पर उससे पूरा-पूरा लाभ उठाया। सिन्ध के मुस्लिम शासकं के निरन्तर आक्रमणों ने गुजरात के राज्यों को निर्बल बना दिया था। चालुक्यों और पल्लवों के पारस्परिक वैमनस्य से दोनों ही राज्य अशक्त हो रहे थे। दंतिदुर्ग ने इस स्थिति का योग्यता पूर्वक उपयोग किया। यहीं नहीं पल्लव वंश के भीतर होने वाले गृहयुद्ध ने भी पल्लव राजनीति में प्रवेश पाने का अवसर प्रदान किया दंतिदुर्ग ने उस अस्थिर वातावरण में अनेक नीतियों से काम लिया। अपनी कूटनीतिक संधियों एवं अभियानों की सहायता से दंतिदुर्ग ने अपने पिता के समस्त राज्य को धीरे-धीरे एक विशाल राज्य में परिवर्तित कर दिया।

प्रारम्भ में दंतिदुर्ग अपने पिता की भाँति चालुक्य नरेश का सामंत था। 752 ई० के एलोरा के लेख में उसे एक मात्र महासमंताधिपति कहा गया है। 754 ई० में चालुक्य नरेश विक्रमादित्य द्वितीय की मृत्यु हो गयी। इस स्थिति के पश्चात् दंतिदुर्ग ने अपनी स्वतन्त्रता घोषित की होगी। 754 के समंगद लेख में उनके लिए महाधिराज की उपाधि का प्रयोग किया गया है।

दंतिदुर्ग ने प्रमुखतया निम्नलिखित राज्यों के विरुद्ध सफलता प्राप्त की थी। यह थी,

Scanned with CamSc

सम्भव है कि इनमें से कुछ युद्ध उसने चालुक्य नरेश के सामंत के रूप में लड़े हो।

सिंध —— 738 के लगभग चालुक्य नरेश विक्रमादित्य और पुलकेशिन ने सिंध के अरबों के विरुद्ध युद्ध किया। इसमें दंतिदुर्ग ने भी भाग लिया। इसमें अरबों को भारी पराजय हुई और भविष्य में उसने फिर कभी गुजरात पर आक्रमण नहीं किया। दंतिदुर्ग की सहायता को स्वीकार करते हुए चालुक्य नरेश ने दंतिदुर्ग को पृथ्वीवल्लभ की उपाधि दी।

कोशल —— अनेक अभिलेखों से प्रगट होता है कि दंतिदुर्ग ने कोशल नरेश उदयन को पराजित किया था। उधर उदयेन्दिरम् ताम्रपत्रों का कथन है कि पल्लव नरेश नंदीवर्मा II ने उदयन को पराजित किया और उसे बंदी बना लिया था। इन दो प्रकार के कथनों के आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि दंतिदुर्ग और नंदिवर्मा II ने सम्मिलित रूप से कोशल नरेश को पराजित किया था। दुब्रिल महोदय का मत है कि दंतिदुर्ग ने पल्लव नरेश के साथ संधि ही नहीं की थी, वरन् उसके साथ अपनी पुत्री शंखा का विवाह भी कर दिया था। परन्तु विवाह के पक्ष में निश्चित प्रमाण नहीं मिलते हैं। बाहुर ताम्रपत्रों का यह कथन अवश्य है कि शंखा राष्ट्रकूट राजकुमारी थी और उसका विवाह नंदीवर्मा के साथ हुआ था। परन्तु यह शंखा राष्ट्रकूट नरेश दंतिदुर्ग की पुत्री थी ऐसा कहीं नहीं लिखा हुआ है। पुनः बाहुर ताम्रपत्रों में उल्लिखित दंतिवर्मा तंतिवर्मा का पुत्र था। जबकि दंतिदुर्ग का समकालीन पल्लव नरेश नन्दीवर्मा द्वितीय परमेश्वर वर्मा अथवा हिरण्य का पुत्र था।

मध्य प्रदेश ⟶ यहाँ बालाघाट के आसपास के प्रदेशों में शैल वंश के राजा जयवर्धन प्रथम राज्य करता था। रघोली ताम्रपत्रों में इस परमेश्वर महाराजाधिराज, सकलविन्ध्याधिपति कहा गया है। उदयेन्दिरम ताम्रपत्रों से प्रकट होता है कि इसने अश्वमेध यज्ञ करने का आयोजन किया था। इसे भी दंतिदुर्ग और पल्लव नरेश नंदीवर्मा द्वितीय सम्मिलित रूप से पराजित किया था।

काँची ⟶ यहाँ पल्लव नरेश परमेश्वरवर्मा का राज्य था। नंदिवर्मा उसका पुत्र न था। सम्भवतः वह राष्ट्रकूट की उपशाखा का राजकुमार था और उसने बलात परमेश्वर वर्मा अथवा उसके किसी उत्तराधिकारी से राज्य छीन लिया था। सम्भवतः दंतिदुर्ग ने पल्लवों से इस युद्ध में भाग लेकर नन्दीवर्मा की सहायता की थी। यही कारण है कि दशावतार गुहालेख में दंतिदुर्ग को काँची नरेश का विजेता कहा गया है।

चालुक्य राज्य ⟶ सिंध के मुस्लिम राज्यों के निरन्तर आक्रमणों के परिणाम स्वरूप चालुक्य राज्य निर्बल हो गया था। दंतिदुर्ग ने इस निर्बलता से लाभ उठाकर और धीरे-धीरे चालुक्य राज्य के अधिकांश प्रदेशों पर अधिकार कर लिया। सर्वप्रथम उसने चालुक्यों के अधीलाट और सिंधप्रदेशों को हस्तगत किया और अपने भतीजे कर्क द्वितीय को अपना गवर्नर नियुक्त किया। इस पश्चात, उसने सम्पूर्ण महाराष्ट्र को जीता। समगद आदि लेखों में उसके द्वारा वल्लभ की पराजय का उल्लेख है। इस विजय से दंतिदुर्ग के हाथ में खानदेश, नासिक, पूना, सतारा और कोल्हापुर के विभिन्न जिला आ गये। अब चालुक्य राज्य बादामी के आस-पास के प्रदेश पर ही रह गया।

उज्जैन ⟶ यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश का राजदेव

राज का राज्य था। सम्भवतः दंतिदुर्ग ने उसे पराजित किया। संजन ताम्रपत्रों का कथन है कि दंतिदुर्ग ने उज्जैन में हिरण्य गर्भदान किया था। उस समय गुर्जर नरेश उसका प्रतिहार बन गया।

कुछ अन्य अभिलेखों से दंतिदुर्ग की कलिंग की शैल और टंक प्रदेशों की विजय भी सिद्ध होती है। समगद ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि उसकी सेनाओं ने शी, महानदी और रेवा नदियों की घाटियों में युद्ध किए। दशावतार गुहालेख में श्री महाराज शर्व को लाट, मालवा, बादामी सिन्धु आदि प्रदेशों के विजय का वर्णन है। इसमें यह नहीं कहा गया है कि यह शर्व कौन था। फ्लीट महोदय का मत था कि यह शर्व राष्ट्रकूट वंश का राजा अमोघवर्ष था। परन्तु डा० अल्तेकर ने इसका खंडन किया है। वे शर्व को दंति-दुर्ग मानते हैं इस दशावतार लेख में दंति-दुर्ग पराजित हुए सिन्धु भूप का उल्लेख है। वास्तव में सिन्धु रूप समझना चाहिए।

अपनी अनेक विजयों के परिणामस्वरूप दंतिदुर्ग ने महाराजाधिराज परमेश्वर और परम भट्टारक की उपाधियां धारण की थी। उसकी मृत्यु लगभग ७३८ ई० के समय राष्ट्रकूट राज्य एक विशाल एवं शक्तिशाली राज्य बन गया।

दंतिदुर्ग ब्राह्मण धर्मावलम्बी था। उज्जैन में उसने जो हिरण्यगर्भदान किया था वह इस कथन का प्रमाण है कि इस अवसर पर उसने एक सप्ताह के दिन अपने को सोने से तौलवाया और उस सोने को ब्राह्मणों में बांट देता

समगद ताम्रपत्रों से प्रगट होता है कि उसने अपनी राजमाता के उच्च धार्मिक अनेक भू खंड ब्राह्मणों को दान दिये थे।